11 केदारनाथ सिंह

केदारनाथ सिंह हिन्दी जगत् में आधुनिक कवि के रूप में चर्चित हैं। इनका जन्म 1934 ई0 में बलिया के चकिया गाँव में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के एक विद्यालय में हुई एवं उच्च शिक्षा बनारस में सम्पन्न हुई। ये अध्ययन काल से ही हिन्दी साहित्य में रुचि लेने लगे थे। ये डॉ0 नामवर सिंह, काशीनाथ सिंह, डॉ0 त्रिभुवन सिंह, कवि त्रिलोचन, डॉ0 शिवप्रसाद सिंह, डॉ0 शम्भुनाथ सिंह के सम्पर्क में निरन्तर रहते थे। कविता लिखने की प्रेरणा केदार जी को अपने ग्रामीण अंचल से प्राप्त हुई। इनका घर गंगा और घाघरा के बीच में पड़ता है। इनके मन में गंगा और घाघरा की लहरों की भाँति भावरूपी लहरें हिलोरें लेती रहती थीं। केदार जी आज भी अपनी धरती की माटी से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। केदार जी उदय प्रताप कॉलेज वाराणसी, सेंट एण्ड्रूज कॉलेज गोरखपुर, उदित नारायण कॉलेज पडरौना, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर में अध्यापक, प्राचार्य और रीडर रहे। ये जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली में भी कार्यरत रहे। इनका निधन 19 मार्च, 2018 को नई दिल्ली में हुआ।

केदारनाथ सिंह ने हिन्दी साहित्य में अनेक रचनाएँ कीं। 'अभी बिल्कुल अभी', 'जमीन पक रही है', 'यहाँ से देखो', 'अकाल में सारस', 'उत्तर कबीर' और अन्य कविताएँ 'मेरे समय के शब्द', 'बाघ' तथा 'कविता-दशक' और 'ताना-बाना' उनकी प्रसिद्ध और चर्चित कृतियाँ हैं। कल्पना और छायावाद, आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्बविधान समीक्षात्मक ग्रन्थ हैं।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–**7 जुलाई, 1934 ई0।
- **जन्म-स्थान–**चकिया गाँव, बलिया (उ.प्र.)।
- **मृत्यु–** 19 मार्च, 2018 ई0।
- **शिक्षा–**प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में एवं उच्च शिक्षा बनारस में।
- **रचनाएँ–**अनेक काव्य ग्रन्थ एवं समीक्षात्मक ग्रन्थ।
- **भाषा–**साहित्यिक खड़ीबोली।
- **शैली–**मुक्तक।
- **संपादन–**हमारी पीढ़ी (पत्रिका), ताना–बाना।
- **प्रमुख रचनाएँ–**कल्पना और छायावाद, सृष्टि का पहरा, यहाँ से देखो, अकाल में सारस, सृष्टि का पहरा, उत्तर कबीर और अन्य कविताएं, टालस्टाय और साइकिल, मेरे समय के शब्द, कल्पना और छायावाद, हिन्दी कविता में बिम्ब-विधान, ताना-बाना (संपादन), समकालीन रूसी कविताएँ, कविता दशक, साखी (अनियतकालीन पत्रिका)।शब्द (अनियतकालीन पत्रिका), हमारी पीढ़ी।

काव्य-भाषा के रूप में केदारनाथ सिंह ने आम बोलचाल की शब्दावली का अधिक प्रयोग किया है, जिसमें यत्र-तत्र भोजपुरी का पुट है। उनकी मान्यता है कि कविता का सबसे सीधा सम्बन्ध भाषा से है। भाषा प्रेषणीयता का सर्वसुलभ माध्यम है। अतः 'शुद्ध कविता' जैसी किसी चीज की कल्पना बिल्कुल बेमानी है। समाज के प्रत्येक सदस्य की छोटी-से-छोटी चेतन-क्रिया किसी-न-किसी अंश में सामाजिक होती है। फिर कविता तो समाज के सबसे अधिक संवेदनशील व्यक्ति की चेतन क्रिया है। उसकी सामाजिकता असन्दिग्ध है। कविता अपने अनावृत्त रूप में केवल मात्र एक विचार, एक भावना, एक अनुभूति, एक हृदय इन सबका कलात्मक संगठन अथवा इन सबके अभाव की एक तीखी पकड़ होती है। यह पकड़ जितनी ही स्वाभाविक होगी, कवि का संवेद्य उतना ही गहरा और प्रभावशाली होगा। इसके लिए उसमें वास्तविकता के विभिन्न स्तरों की प्रत्यक्ष जानकारी होनी चाहिए और यह जानकारी सोलहों आने उसकी अपनी

होनी चाहिए। केदारनाथ की भाषा के सन्दर्भ में जहाँ तक सोलहों आने सच जानकारी होने का प्रश्न है, यह कहा जा सकता है कि केदारनाथ सिंह को ग्रामीण जीवन और उसके परिवेश की भरपूर जानकारी है। उनकी भाषा में ग्रामीण शब्द के प्रयोग की एक झलक देखिए–

पकते धानों से महकी मिट्टी, फसलों के घर पहली थाप पड़ी
शहर के उदास काँपते जल पर, हेमन्ती रातों की भाप पड़ी
सूइयाँ समय की सब ढार हुईं, छिन, घड़ियों, घण्टों का पहरा उठा।

केदारनाथ सिंह की अन्य अनेक ऐसी कविताएँ हैं जिनमें उन्होंने ग्रामीण शब्दों का प्रयोग किया है। इन ग्रामीण शब्दों में भोजपुरी के शब्दों का खुलकर प्रयोग भी हुआ है। कुल मिलाकर उनकी भाषा बोझिल नहीं प्रतीत होती है। वह भावों और विचारों की अभिव्यक्ति में पूर्णतया सक्षम है।

●●

नदी

अगर धीरे चलो
वह तुम्हें छू लेगी
दौड़ो तो छूट जायेगी नदी
अगर ले लो साथ
वह चलती चली जायेगी कहीं भी
यहाँ तक-कि कबाड़ी की दुकान तक भी
छोड़ दो
तो वहीं अँधेरे में
करोड़ों तारों की आँख बचाकर
वह चुपके से रच लेगी
एक समूची दुनिया
एक छोटे-से घोंघे में
सचाई यह है
कि तुम कहीं भी रहो
तुम्हें वर्ष के सबसे कठिन दिनों में भी
प्यार करती है एक नदी
नदी जो इस समय नहीं है इस घर में
पर होगी जरूर कहीं न कहीं
किसी चटाई
या फूलदान के नीचे
चुपचाप बहती हुई
कभी सुनना
जब सारा शहर सो जाय
तो किवाड़ों पर कान लगा
धीरे-धीरे सुनना
कहीं आसपास
एक मादा घड़ियाल की कराह की तरह
सुनाई देगी नदी।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—
   (क) अगर धीरे ·····तक भी।
   (ख) छोड़ दो ·····घोंघे में।
   (ग) सचाई यह ·····के नीचे।
   (घ) चुपचाप ·····देगी नदी।
2. केदारनाथ सिंह का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2017AC,AE,19AD,20MD)**
3. केदारनाथ सिंह के साहित्यिक अवदान एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
4. केदारनाथ सिंह की जीवनी तथा उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए और काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।
5. केदारनाथ सिंह का जीवन-परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
6. 'नदी' शीर्षक कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
7. 'नदी' शीर्षक कविता में नदी की गतिशीलता की विशेषताएँ बताइए।
8. 'नदी' शीर्षक कविता से क्या शिक्षाएँ मिलती हैं?
9. 'वह चुपके से रच लेगी/एक समूची दुनिया/एक छोटे-से घोंघे में' का भावार्थ बताइए।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

केदारनाथ सिंह की रचनाओं को सूचीबद्ध कीजिए।

टिप्पणी

➨ नदी

छू = स्पर्श। **कबाड़ी** = रद्दी की दुकानवाला। **रच लेगी** = निर्माण कर लेगी। **समूची** = सम्पूर्ण। **किवाड़** = दरवाजा। **घड़ियाल** = मगरमच्छ जैसा जलीय जीव। **दुनिया** = संसार। **आँख बचाकर** = छिपकर। **चुपके से** = बिना आवाज किये। **फूलदान** = गमला। **चुपचाप** = मौन होकर। **कराह** = पीड़ा की आवाज, आह।

●●